

मानसी

भाग-2

कक्षा-10

खंड - 1/5

गद्य

पाठ-1

भगवती प्रसाद वाजपेयी

भगवती प्रसाद वाजपेयी का जन्म कानपुर जिले के मंगलापुर गाँव में सन् 1899 ई. में हुआ। बचपन में ही उनके माता-पिता की मृत्यु हो गई थी। इसी कारण उन्हें मिडिल (आठवीं कक्षा) तक ही नियमित शिक्षा मिल सकी। जीविका चलाने के लिए उन्होंने अनेक कार्य किए-जैसे पशु चराना, खेती करना, पुस्तकालय की नौकरी, छापेखाने में प्रूफरीडरी, अध्यापन आदि। अपनी साहित्य-सेवा के कारण वे हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की साहित्य-सम्मेलन के सभापति भी चुने गए।

वाजपेयी जी प्रेमचन्द जी के बाद की पीढ़ी के साहित्यकार हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता आदि विधाओं में काफी साहित्य लिखा है। उनकी मुख्य देन कथा-साहित्य के क्षेत्र में है। उन्होंने सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विषयों पर अनेक कहानियाँ लिखी हैं। उनके पात्र मध्यम वर्ग के हैं। उनकी भाषा सहज और प्रवाहमयी है। बालोपयोगी साहित्य तथा संपादन के क्षेत्र में भी उनका काफी योगदान है। उन्होंने 'ऊर्मि', 'आरती' आदि पत्रिकाओं का संपादन भी किया।

प्रेमपथ, त्यागमयी, मनुष्य और देवता, विश्वास का बल, हिरन की आँखें आदि उपन्यास तथा मधुपर्क, हिलोर, दीपमालिका, मेरे सपने, बाती और लौ, उपहार आदि कथा-संग्रह वाजपेयी जी की प्रमुख रचनाएँ हैं।

//////////

मिठाईवाला

(प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने एक ऐसी धनी और प्रतिष्ठित व्यक्ति की मनःस्थिति का वर्णन किया है, जिसने असमय ही अपने बच्चों को खो दिया। अपने बच्चों की झलक अन्य बच्चों में देखने के लिए वह उन्हें लुभाने वाली चीजें, जैसे-मिठाई मुरली आदि बेचता है। बच्चे उससे ये चीजें खरीदकर खुश होते हैं। उनकी में वह अपने बच्चों की खुशी देखता है। वात्सल्य की इस अनुभूति में उसे संतोष प्राप्त होता है।)

बहुत ही मीठे स्वर में वह गलियों में घूमता हुआ कहता, "बच्चों को बहलानेवाला, खिलौनेवाला।"

इस अधूरे वाक्य को वह ऐसे विचित्र, किन्तु मधुर ढंग से गाकर कहता कि सुनने वाले एक बार चंचल हो उठते। उसके स्नेहाभिषिक्त कंठ से फूटा हुआ उपर्युक्त गान सुनकर निकट के मकानों में हलचल मच जाती है। छोटे-छोटे बच्चों को अपनी गोद में लिए स्त्रियाँ चिकों को उठाकर छज्जों पर से नीचे झाँकने लगतीं। गलियों तथा उनके अंतर्व्यापी छोटे-छोटे उद्यानों में खेलते और इठलाते हुए बच्चों का झुंड उसे घेर लेता और तब वह खिलौनेवाला वहीं-कहीं बैठकर खिलौनों की पेटी खोल देता।

बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते। वे पैसे लाकर खिलौने के मोल-भाव करने लगते। पूछते, "इछका दाम क्या है, और इछका, औल इछका?"

खिलौनेवाला बच्चों को देखता, उनकी नन्हीं-नन्हीं उँगलियों और हथेलियों से पैसे लेता और बच्चों की इच्छानुसार उन्हें खिलौनेवाला उसी प्रकार गाकर कहता, "बच्चों को बहलानेवाला, खिलौनेवाला।" सागर की हिलोर की भाँति उसका यह मादक गान गली-पार के मकानों में इस ओर से उस ओर तक लहराता हुआ पहुँचता और खिलौनेवाला बढ़ जाता।

राय विजय बहादुर के बच्चे भी एक दिन खिलौने लेकर घर आए। वे दो बच्चे थे-चुन्नू और मुन्नू। चुन्नू जब खिलौने ले आया तो बोला, "मेला घोला कैछा छुंदल ऐ।"

मुन्नू बोला, "और देथो, मेला आती कैछा छुंदल ऐ!"

दोनों अपने हाथी-घोड़े लेकर घर-भर में उछलने लगे। इन बच्चों की माँ रोहिणी कुछ देर तक खड़े-खड़े उनका खेल निरखती रही। अंत में दोनों बच्चों को बुलाकर उसने उनसे पूछा, - "अरे ओ चुन्नू-मुन्नू, ये खिलौने तुमने कितने में लिए हैं?"

मुन्नु बोला, "दो पैछे में खिलौनेवाला दे गया ऐ।"

रोहिणी सोचने लगी, "इतने सस्ते कैसे दे गया?"

कैसे दे गया है, यह तो वही जाने। लेकिन दे तो गया ही है, इतना तो निश्चय है। जरा सी बात ठहरी। रोहिणी अपने काम में लग गई। फिर कभी इस पर उसे विचार करने की भला आवश्यकता ही क्यों पड़ती?

छह महीने बाद।

नगर भर में एक मुरलीवाले के आने का समाचार फैल गया। लोग कहने लगे, "भई वाह! मुरली बजाने में वह एक ही उस्ताद है। मुरली बजाकर, गाना-सुनाकर वह मुरली बेचता भी है। सो भी दो-दो पैसे। भला, इसमें उसे क्या मिलता होगा? मेहनत भी तो न आती होगी!" एक व्यक्ति ने कहीं पूछ लिया, "कैसा है वह मुरलीवाला, मैंने तो उसे नहीं देखा।"

उत्तर मिला, "उम्र तो उसकी अभी अधिक न होगी, यही कोई तीस-चालीस का होगा। दुबला-पतला गोरा युवक है बीकानेरी रंगीन साफा बाँधता है।"

"वही तो नहीं, जो पहले खिलौने बेचा करता था?"

"तो क्या वह पहले खिलौने भी बेचता था?"

"हाँ, जो आकार-प्रकार तुमने बतलाया, उसी प्रकार का वह भी था।"

"तो वही होगा। पर भई, है वह एक ही उस्ताद!"

प्रतिदिन इसी प्रकार उसी मुरलीवाले की चर्चा होती। प्रतिदिन नगर की प्रत्येक गली में उसका मादक-मृदुल स्वर सुनाई पड़ता, 'बच्चों को बहलानेवाला, मुरलियावाला।"

रोहिणी ने भी मुरलीवाले का यह स्वर सुना। तुरंत ही उसे खिलौनेवाले का स्मरण हो आया। उसने मन-ही-मन कहा, "खिलौनेवाला भी इसी प्रकार गाकर खिलौने बेचा करता था।"

रोहिणी उठकर अपने पति विजय बाबू के पास गई, बोली, "जरा उस मुरलीवाले को बुलाओ तो, मैं भी चुन्नू-मुन्नू के लिए ले लूँ। क्या जाने वह फिर इधर आए, न आए। जान पड़ता है बच्चे पार्क में खेलने निकल गए हैं।"

विजय बाबू समाचार-पत्र पढ़ रहे थे। उसी तरह उसे लिए हुए वे दरवाजे पर आकर मुरलीवाले से बोले, "क्यों भाई, किस भाव देते हो मुरली?"

मुरलीवाले की आवाज सुनकर दौड़ते-दौड़ते बच्चों का झुंड भी आ पहुँचा। एक स्वर से बोल उठे, "अम बी लेंदे मुल्ली अम बी लेंदे मुल्ली।"

मुरलीवाला हर्ष से गद्गद् हो उठा। बोला, "सबका देंगे भैया। लेकिन जरा रुको, जरा ठहरो, एक-एक को लेने दो। अभी इतनी जल्दी हम कहीं लौट थोड़े ही जाएँगे। बेचने ही तो आए हैं, और हैं भी इस समय मेरे पास एक-दो नहीं, पूरी सत्तावन।.....हाँ बाबूजी, क्या पूछा था आपने, "कितने में दी?" . . . .दी तो वैसे तीन-तीन पैसे के हिसाब से हैं, पर आपको दो-दो पैसे में दे दूँगा।"

विजय बाबू भीतर-बाहर दोनों रूपों से मुसकरा दिए। मन-ही-मन कहने लगे, कैसा ढग है! देता सबको इसी भाव से है, पर मुझ पर उल्टा एहसान लाद रहा है। फिर बोले, "तुम लोगों की झूठ बोलने की आदत हो जाती है। देते होंगे सभी को दो-दो पैसे में एहसान का बोझ मुझ पर लाद रहे हो।"

मुरली वाला एकदम अप्रतिभ हो उठा। बोला, "आपको क्या पता बाबूजी कि इनकी असली लागत क्या है। यह तो ग्राहकों का दस्तूर होता है कि दुकानदार चाहे हानि ही उठाकर चीज क्यों न बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं, दुकानदार मुझे लूट रहा है!.....आप भला काहे को विश्वास करेंगे। लेकिन सच पूछिए तो बाबूजी, इनका असली दाम तीन ही पैसा है। आप कहीं से भी दो-दो पैसे में ये मुरलियाँ नहीं पा सकेंगे। मैंने तो पूरी एक हजार बनवाई, तब मुझे इस भाव पड़ी है।"